

भारत में मतदान व्यवहार के निर्धारित तत्वों में लिंग व नृजातीयता की भूमिका

(Role of Gender and Ethnicity in voting Behaviour in India)

डॉ जावेद अख्तर

प्रभारी, सहायक प्रोफेसर राजनीति विज्ञान विभाग

राजकीय पीजी कॉलेज, छर्गा, अलीगढ़

javed8466@gmail.com

भारत में मतदान व्यवहार के औचित्य के निर्धारक अध्ययन में राजनीतिक शास्त्री समाजशास्त्रीय मानवविज्ञानी, मीडियाकर्मी व राजनीतिक दलों के अभिजन इस अध्ययन में लगे हुए हैं स्वतंत्रता के पश्चात भारत में सन् 1951-52 के आम चुनाव में ही इस प्रकार के अध्ययन प्रारंभ हुए थे। रजनी कोठारी व माइनर विनर जैसे विद्वानों ने इसका शुभारंभ किया था तथा 1980 के दशक में इस अध्ययन को प्रणवराय तथा अशोक लाहिरी के विश्वासों ने इसे बढ़ावा दिया किंतु चुनाव अध्ययनों का निर्वात ढंग से 1990 के दशक से होता आ रहा है। इसका मुख्य कारण लगातार लोकसभा अथवा राज्यों की विधानसभाओं के चुनाव में हो रही लगातार वृद्धि है भारत के चुनाव के व्यवहारों के अध्ययन का श्रेय शिक्षामित्र डॉक्टर योगेंद्र यादव को दिया जाता है जो कि भारत में सी0एस0डी0एस0 व लोकनीति के संस्थापक रहे हैं। सी0एस0डी0एस0 संस्था द्वारा देश के कई विश्वविद्यालय के विद्वानों ने चुनाव अध्ययन का प्रबंध किया था और किया जा रहा है 1998 के आम चुनाव में मैंने एक घटक के रूप में इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद में कार्यशाला में भाग लिया था। मतदान व्यवहार राजनीतिक व्यवहार का स्वरूप है जिसके इस कर्क व परिस्थितियों का अध्ययन व विश्लेषण किया जाता है कि किस प्रकार मतदान की कौन से कारक जिसमें इस शोध पत्र में लिंग नृजातियां कैसे प्रेरित व उदासीन करती हैं वास्तव में इस प्रकार के अध्ययन अर्थात् चुनाव के अध्ययन के विषयों का अध्ययन सेंफोर्लॉजी के अंतर्गत किया जाता है हम कह सकते हैं कि मतदान राजनीतिक व्यवहार का इस प्रकार है तथा मतदाताओं का व्यवहार इस कथन का विश्लेषण हो सकता है कि लोक नृत्य के निर्धारक पर निर्वाचन निर्वाचक मंडल किसी भी तरह का निर्णय अथवा फैसला कैसे हुआ क्यों लेते हैं। चुनाव अध्ययन करने के दंगों में मुख्ता सर्वेक्षण सम्मिलित है इन संरक्षण को राष्ट्रीय चुनाव सर्वेक्षण कहा जाता है चुनाव के पूर्व परि पाल अथवा पोस्टपोल पक्ष शोधकर्ता द्वारा चुनाव प्रभाव के कई पहलुओं को जानने हेतु सर्वेक्षण के अध्ययन से अध्ययनों के परमाणुओं के विभिन्न पुस्तकों लेखों तथा पत्रिकाओं में प्रकाशित किया जाता है।

लिंग (Gender)

भारत जैसे पुरुष प्रधान देश में भारतीय राजनीति को निर्धारण करने में जितना कदाचित् अकाल किया है वह तत्व लिंग ही है साथ ही इसको प्रभावित करने में नृजातीयता भी पीछे नहीं है सन 2014 से पहले तक लिंग का कारण मतदान व्यवहार के विश्लेषण हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण वर्ण नहीं माना जाता था। क्योंकि भारत जैसे देश में शिक्षा के अभाव व पारिवारिक दबाव में ही

मतदान महिलाओं द्वारा किया जाता रहा है परंतु 90 के दशक में लोकसभा व विधानसभा के चुनाव में महिलाओं की सक्रिय साझेदारी में जैसे-जैसे व्रत हुई उससे भारतीय राजनीति में एक महिला के मतदान प्रवृत्ति का दबाव देखने को मिलता है जैसे की 70 के दशक में महिलाओं द्वारा इंदिरा गांधी कितने समर्थन में मतदान को अपवाद स्वरूप ही समझा जा सकता है 2004 से 2009 के चुनाव परिणाम देखने में यह भी सूचना पड़ गया है कि लिंग भी मतदान प्रभाव करने वाले कारक के रूप में सामने आ सकता है संसद में विधानसभा में अत्यधिक पर्याप्त भागीदारी न होने के बावजूद महिलाओं के मतदान व्यवहार की प्रकृति में कुछ परिवर्तन देखने को मिलता है तथा 2014 के आम चुनाव में महिलाओं ने खुलकर भागीदारी की और इस बात को सिद्ध कर दिया कि महिलाएं भी राजनीतिक व्यवहार व परिणाम को परिवर्तन करने के सक्रिय भूमिका का निर्माण कर सकती हैं इसलिए लिंग कारक के अध्ययन में के बगैर मतदान व्यवहार की प्रकृति प्रकृति का यथार्थ पूर्ण अध्ययन नहीं हो सकता है जहां तक महिलाओं के राजनीतिक प्रतिनिधित्व का सवाल है तो भारतीय राजनीति में महिलाओं की स्थिति लोकतंत्र से संबंध अवसर तथा बंधनों में निर्देशित रही है भारत में महिलाएं विभिन्न सामाजिक आंदोलन गैर सामाजिक संगठनों गोस में सक्रिय भागीदारी करती नहीं है इनमें मुख्य रूप से राष्ट्रपति द्रोपति मुर्मू, श्रीमती इंदिरा गांधी, सोनिया गांधी, प्रतिभा देवी पाटिल, नाजमाहेतुल्लाह, मायावती, जयललिता, ममता बनर्जी जैसी महिलाओं ने भूमिका अदा कि तथा मुख्यमंत्री प्रधानमंत्री तथा राष्ट्रपति जैसे संवैधानिक पदों पर सुशोभित रही थी साथी निकले पंचायती राज व्यवस्था के चुनाव में भी अपना प्रभाव बनाए रखने में कामयाब नहीं यदि लोकसभा में महिला परिषद की बात की जाए तो 1952 में कुछ लोग सीटों पर 489 में से 22 महिला थी तथा 2014 के चुनाव में जीतने वाली 544 सीटों में 61 महिलाएं थी जबकि 18वीं लोकसभा में 74 महिलाएं चुनकर आई इनका कुल प्रतिशत 13.63 है जबकि 70वीं लोकसभा में महिलाओं की संख्या 78 थी।

मतदान में लैंगिक पूर्वाग्रह:

ऐतिहासिक रूप में राजनीतिक शक्ति पुरुषों द्वारा आसमान रूप से धारण की गई है तथा गैर प्रतिनिधित्व संतुलन आज भी परिलक्षित होता है जिसमें अधिकांश उच्चतम राजनीतिक कार्यों पुरुषों द्वारा कब्जा गए हैं या प्रकृति लोकतंत्र में भी जहां राजनीतिक तत्व की रूप से सभी लोगों के लिए सुलभ है यह असमानता कई कारकों का एक उत्पाद है। लेकिन कुछ सुझाव देते हैं कि मतदाताओं का लिंग पूर्वाग्रह इस राजनीतिक लिंग के अंतर को बनाए रखने की भूमिका निभाता है जबकि राजनीतिक उम्मीदवारों की शारीरिक विशेषताएं मतदाता पूर्वाग्रहों को एक विशिष्ट लिंग आधारित तरीके से प्रभावित करती है 2008 के अध्ययन में पाया गया कि पुरुषों द्वारा आकर्षक महिला उम्मीदवार को वोट देने की अधिक संभावना रहती है जबकि महिलाओं द्वारा सुलभ पुरुष उम्मीदवारों को वोट देने की अधिक संभावना रहती है। निष्कर्षता: उन विभिन्न मानव को प्रतिध्वनित करता है जिन्हें राजनीतिक दौड़ में दावेदारी के रूप में गंभीरता से लिए जाने के लिए पुरुष उम्मीदवारों के विपरीत महिला उम्मीदवारों को पूरा करने की आवश्यकता होती है यह शोध या भी संकेत करता है कि एक राजनीतिक उम्मीदवार का लिंग महिलाओं द्वारा राजनीतिक योग्यता का मूल्यांकन करने के तरीके वह व्यवहार को बदल देता है मतदाता उम्मीदवारों के विषय में क्या जानना चाहते हैं या उम्मीदवार के लिंग के अनुसार भिन्न-भिन्न होता है महिलाओं उम्मीदवारों के लिए मतदाता पुरुष उम्मीदवारों की तुलना में शिक्षा स्तर और व्यावसायिक स्तर अनुभव योग्यता संबंधी जानकारी चाहता है। वह एक तरह से लिंग आधारित होती है जो अप्रत्यक्ष रूप से मतदान व्यवहार को प्रभावित करती है यह एक समग्र पूर्वाग्रह है जो बताता है कि मतदाता राजनीतिक कारकों के बारे में धरना बनाने के लिए उम्मीदवार के लिंग का उपयोग कर रहे हैं जो अपेक्षाकृत उनके करीबी होते हैं कुछ महिला मतदाताओं को स्वाभाविक रूप से लगता है कि महिलाएं आज समय ही उनके विश्वासों से जुड़ जाएंगे और उन्हें समझ लेंगे। यह इस बात का भी सबूत है कि एक महिला उम्मीदवार की उपस्थिति मतदान में राजनीतिक भागीदारी को प्रोत्साहित करती है एक महिला उम्मीदवार की उपस्थिति मात्र से महिला मतदाता मतदान में वृद्धि पाई गई।

अतः यह शोध निष्कर्ष इस विचार का समर्थन करता है कि अभियानों में महिलाओं का वर्णनात्मक प्रतिनिधित्व महिलाओं के समग्र राजनीतिक दृष्टिकोण और मतदान व्यवहार के प्रभावित करती है।

यदि देखा जाए कि भारत के राज्यों में महिला मतदाताओं की संख्या में जो जो उभसर आया है उस शिक्षा महिला सुरक्षा कन्याओं तथा छात्रों के मध्य साइकिल व लैपटॉप सेल फोन वितरण आदि का प्रमाण माना जा रहा है परंतु प्रणाम भाजपा के पक्ष में जाता रहा है इस बात को सिद्ध करता है कि विकास भ्रष्टाचार मुक्त भारत तीन तलाक गौहर अच्छा इतिहास मुद्दे से महिला अधिक प्रभावित होकर काफी संख्या में बंधन करता के रूप में सम्मिलित हुई है और यही स्थिति मणिपुर उत्तराखंड पंजाब एवं गोवा की भी रही है जहां महिलाओं की भूमिका पुरुषों की भूमिका में अधिक रही है महिला तथा पुरुष मतदाताओं की प्रतिशतता क्रमशः पंजाब में 78.12% एवं 76.69% उत्तराखंड में उत्तर प्रदेश 69.34 एवं 62.5% मणिपुर में 47% परसेंट एवं 44% तथा उत्तरी गोवा में 84.58% तथा दक्षिणी गोवा में 81.19% तथा 75.50% रही है।

जैसाकि 2014 के आम चुनाव में महिला व पुरुष मतदाताओं की प्रतिशत का अंतर अत्यधिक कम रहा है 67% पुरुष एवं 66% प्रतिशत महिला तथा लिंग के तत्व को राजनीतिक व्यवहार के विश्लेषण की एक विशेष इकाई के रूप में मात्र 01% के रूप में स्थापित हुआ है वास्तव में महिलाओं के मतदान व्यवहार पुरुषों के मतदान व्यवहार पर अत्यधिक प्रभावित करता है।

मतदान व्यवहार में नृजातीयता की भूमिका:

नृजातीयता केवल अपने पहचान को बनाए रखने के प्रयास में बनी रहती हैं साहित्य में न जातियों का उपयोग दो प्रकार से किया जाता रहा है एक पहचान बनाए रखने का आधार किसके एक से अधिक कारक होते हैं जैसे जैसे धर्म जाति भाषा तथा संस्कृत दूसरे में केवल एक कारक होता है जैसे कबीलाई वर्गों में पाया जाता है नृजातीयता केवल मात्र चुनाव में ही नहीं बल्कि राजनीतिक दलों के गठन में भी बड़ी भूमिका निभाते हैं डॉक्टर चंदन ने कहा है कि उत्तर भारत में बहुजन समाज पार्टी एक नृजातीयता पर आधारित पार्टी है बहुजन पार्टी का जन्म दलित और पिछड़ा वर्ग के सामाजिक आंदोलन वर्गीकरण से हुआ है तत्पश्चात में वर्ग ही इस पार्टी का जनाधार बने हैं। यह नृजातीयता पार्टी को परिभाषित किया जाए तो यह पार्टी मुख्य रूप से नृजातीयता समूह के हितों की बात करती हैं और यह मानना है कि भाजपा का समर्थन मुक्ता दलित वर्क करता है और दूसरे वर्ग इसमें सम्मिलित नहीं होते हैं।

विशेषताएं:

किसी भी नृजातीयता पार्टी के मुख्य रूप से तीन विशेषताएं होती हैं:-

1. इनमें एक समूह का निर्माण किसी मौलिक कारण जैसे जाति के आधार पर होता है।
2. यह समूह के सदस्यों को लामबंद करती हैं तथा समूह बाहरी लोगों को लामबंद नहीं करती हैं।
3. या जाति समूह के हितों को ही महत्ता प्रदान करती हैं पार्टी के आंतरिक संरचना का प्रश्न होता है तो इस संदर्भ में डॉ चंद्रा जी भी मानती है कि- जो पार्टी में केन्द्रीयकृत नियमों का पालन करती हैं वह अन्य किसी भी जाति समूह को सम्मिलित करने में परेशानी महसूस करती हैं किंतु जो परिया इसमें सफलता प्रदान करती हैं वह इन पर सम्मिलित करने में समर्थ होती हैं यहां यह कहा जा सकता है कि यह उन पार्टियों को सफलता पर निर्भर करती है कि उन जातियों को किस प्रकार से साथ रखती है जैसा की 2012 विधानसभा चुनाव उत्तर प्रदेश में पश्चिमी उत्तर प्रदेश के मुस्लिम जातियों ने बसपा का साथ दिया था परंतु उन्हें अधूरे मन से ही पार्टी में जगह मिली थी देखा जाए तो जाती तक सबसे सुधार भारत के पूर्वोत्तर भाग राज्यों तथा आदिवासी क्षेत्रों को दिया जा सकता है यहां पर मतदान व्यवहार

तथा निर्धन इसके कारक के आधार पर होते हैं भारत के पूर्वोत्तर राज्य जाते थे आधारित निर्वाचन राजनीतिक मतदान के व्यवहार में उत्प्रेक्षा सुधार प्रस्तुत करती हैं इन क्षेत्रों में दो प्रकार के निर्जातियां समूह पाए जाते हैं एक वह जो अति प्राचीन समय से क्षेत्र में रहते आ रहे हैं तथा दो जो लोग कई कर्म से रोजगार व्यापार तथा खेती के लिए समय-समय पर कुछ अवधि के लिए अन्य देशांतर में चले जाते हैं।

पहचान निर्माण के आधार: संस्कृति, भाषा, वस्त्र, खानपान तथा लोक और इतिहास अर्थव्यवस्था पक्ष तथा एक जैसी शोषण स्थिति भावना कला आदि उपरोक्त सभी चीजों पर अनेक जाति समूह का गठन हुआ है जो बाद में नृजातीयता का रूप लेती है इसके साथ ही राजनीतिक चेतना प्रतिस्पर्धा तथा राजनीतिक लामबंदी के चिह्न बने हुए हैं इन्हें अन्य तरीके से जैसे कि नागरिकता पहचान संरक्षण प्रवास संस्कृति व भूमि को रक्षा के आधार पर प्रकट किया जा सकता है।

उपरोक्त मामलों में एक जैसा क्षेत्रीय स्वायत्ता, आत्मनिर्भरता, आत्मनिर्णय व संस्कृति अधिकारों की सुरक्षा की मांग के लिए नहीं बल्कि चुनाव के समय भी होती है मतदान के समय में सभी संयुक्त रूप से ही मतदान का व्यवहार काफी समय तक सुनिश्चित करते हैं कई क्षेत्रों में देखा गया है की नस्ली समूह की एकता व समर्थन पाने वाले दलों को विजय प्राप्त होती है इनका यही आधार या आचरण इन्हें मतदान व्यवहार करने वाले कारकों में सम्मिलित करता है बल्कि यह एक अर्थात् नृजातीयता एक महत्वपूर्ण कारकों में से एक है, जो मतदान व्यवहार को प्रभावित करता है और करता रहेगा।

संदर्भ सूची:

1. भारतीय लोकतंत्र के में मतदान व्यवहार, नवभारत प्रकाशन, डॉ० कल्पना वैश्य।
2. भारतीय शासन एवं राजनीति, डॉ० बी०एल० फाड़िया, साहित्य भवन प्रकाशन, आगरा।
3. डॉ० पुरोहित राजनीति में मतदान व्यवहार का स्वरूप, इंटरनेशनल जनरल ऑफ हिंदी रिसर्च, वॉल्यूम-7, इश्यू-2021।
4. भारत में राजनीतिक प्रक्रिया, डॉ० पुखराज जैन पेज-106,108।
5. डॉ० हरीश चंद्रा 2000 शब्दों में विकोपिडियाँ, इण्डियाँ।
6. चुनावी व्यवहार को SAGE पुस्तिका, आजार्इमर काहि, लुईसबेक, माइकल एस०, इवांस-2016 सेज पब्लिकेशन।
7. लिंग और राजनीतिक व्यवहार, मिकी कौलकिटिलसम, ऑनलाइन प्रकाशित 09 मई 2016

<https://doi.org/10.1093/acrefore/9780190228637.013.71>